

उपभोक्ता के व्यवहार का सिद्धांत

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» उपभोक्ता व्यवहार का परिचय और मूल अभिग्रह

प्रश्न 1 (आसान). उपभोक्ता व्यवहार का मुख्य उद्देश्य क्या है?

उत्तर – अपनी आय का इस तरह से उपयोग करना ताकि अधिकतम संतुष्टि प्राप्त हो सके।

प्रश्न 2 (आसान). अगर एक उपभोक्ता 2 पेंसिल और 3 रबर खरीदता है, तो यह क्या कहलाता है?

उत्तर – एक उपभोक्ता बंडल।

प्रश्न 3 (मध्यम). अगर आपके पास ₹500 हैं और आप शर्ट (₹250) तथा पैंट (₹400) खरीदना चाहते हैं, तो क्या आप दोनों खरीद सकते हैं? क्यों नहीं?

उत्तर – नहीं, क्योंकि दोनों की कुल कीमत (₹250 + ₹400 = ₹650) आपके पास मौजूद ₹500 से ज्यादा है। आपकी आय सीमित है।

प्रश्न 4 (कठिन). उपभोक्ता व्यवहार के विश्लेषण को सरल बनाने के लिए अक्सर दो वस्तुओं के बंडल का उपयोग क्यों किया जाता है?

उत्तर – दो वस्तुओं का उपयोग करने से विश्लेषण को समझना और ग्राफिकली (चित्रों के माध्यम से) समझाना आसान हो जाता है, जबकि असल जीवन में उपभोक्ता कई वस्तुएँ खरीदता है।

» उपयोगिता: गणनावाचक दृष्टिकोण

प्रश्न 5 (आसान). उपयोगिता का क्या अर्थ है?

उत्तर – किसी वस्तु की आवश्यकता को संतुष्ट करने की क्षमता।

प्रश्न 6 (आसान). गणनावाचक दृष्टिकोण के अनुसार, उपयोगिता को कैसे मापा जा सकता है?

उत्तर – संख्याओं या इकाइयों (यूटिल्स) में।

प्रश्न 7 (मध्यम). अगर एक खिलौना बच्चे को 50 इकाई उपयोगिता दे रहा है और दूसरा खिलौना 30 इकाई, तो बच्चा कौन सा खिलौना पसंद करेगा, गणनावाचक दृष्टिकोण के अनुसार?

उत्तर – गणनावाचक दृष्टिकोण के अनुसार, बच्चा पहला खिलौना पसंद करेगा क्योंकि वह अधिक उपयोगिता (50 इकाई) दे रहा है।

प्रश्न 8 (कठिन). क्या उपयोगिता हमेशा लाभदायक होती है? एक उदाहरण से समझाइए।

उत्तर – नहीं, उपयोगिता हमेशा लाभदायक नहीं होती। उदाहरण के लिए, शराब या तंबाकू का सेवन करने वाले व्यक्ति को उससे उपयोगिता (संतुष्टि) मिल सकती है, भले ही वह उसके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो।

» कुल उपयोगिता और सीमांत उपयोगिता

प्रश्न 9 (आसान). अगर 1 आइसक्रीम से कुल उपयोगिता 15 है और 2 आइसक्रीम से कुल उपयोगिता 25 है, तो दूसरी आइसक्रीम की सीमांत उपयोगिता कितनी है?

उत्तर – 10 इकाई

प्रश्न 10 (आसान). सीमांत उपयोगिता शून्य कब होती है?

उत्तर – जब कुल उपयोगिता अपने अधिकतम स्तर पर हो।

प्रश्न 11 (मध्यम). अगर कुल उपयोगिता घट रही हो, तो सीमांत उपयोगिता कैसी होगी?

उत्तर – ऋणात्मक

प्रश्न 12 (कठिन). कुल उपयोगिता और सीमांत उपयोगिता के बीच संबंध को संक्षेप में समझाइए।

उत्तर – जब MU धनात्मक होती है, TU बढ़ती है (घटती दर से)। जब MU शून्य होती है, TU अधिकतम होती है। जब MU ऋणात्मक होती है, TU घटने लगती है।

» हासमान सीमांत उपयोगिता नियम

प्रश्न 13 (आसान). हासमान सीमांत उपयोगिता नियम किस प्रकार की उपयोगिता से संबंधित है?

उत्तर – सीमांत उपयोगिता (Marginal Utility)

प्रश्न 14 (आसान). क्या कुल उपयोगिता हमेशा घटती है जब यह नियम लागू होता है?

उत्तर – नहीं, कुल उपयोगिता घटती हुई दर से बढ़ती है, फिर अधिकतम होकर घट सकती है।

प्रश्न 15 (मध्यम). यदि किसी वस्तु की पहली इकाई से 12 यूनिट सीमांत उपयोगिता मिलती है और दूसरी इकाई से 9 यूनिट, तो इस पर कौन सा नियम लागू होता है?

उत्तर – हासमान सीमांत उपयोगिता नियम

प्रश्न 16 (कठिन). कुल उपयोगिता अधिकतम कब होती है?

उत्तर – कुल उपयोगिता अधिकतम तब होती है जब सीमांत उपयोगिता शून्य होती है।

» एकल वस्तु के लिए मांग वक्र की व्युत्पत्ति (गणनावाचक विश्लेषण से)

प्रश्न 17 (आसान). मांग वक्र कैसा ढलान दिखाता है - ऊपर की ओर या नीचे की ओर?

उत्तर – नीचे की ओर

प्रश्न 18 (आसान). मांग वक्र को बनाने के लिए कौन सा नियम आधार है?

उत्तर – हासमान सीमांत उपयोगिता नियम

प्रश्न 19 (मध्यम). अगर एक वस्तु की कीमत कम होती है, तो उसकी मांगी गई मात्रा पर क्या असर होगा और क्यों?

उत्तर – कीमत कम होने पर मांगी गई मात्रा बढ़ेगी, क्योंकि सीमांत उपयोगिता कीमत के बराबर होने तक व्यक्ति ज़्यादा इकाइयां खरीदेगा।

प्रश्न 20 (कठिन). गणनावाचक विश्लेषण में मांग वक्र की व्युत्पत्ति किस आधार पर की जाती है? समझाएं।

उत्तर – गणनावाचक विश्लेषण में मांग वक्र हासमान सीमांत उपयोगिता नियम के आधार पर व्युत्पन्न होता है। उपभोक्ता अधिकतम संतुष्टि तब प्राप्त करता है जब वस्तु से प्राप्त सीमांत उपयोगिता (MU_x) उसकी कीमत (P_x) के बराबर हो जाती है ($MU_x = P_x$)। चूंकि सीमांत उपयोगिता लगातार उपभोग से घटती है, इसलिए उपभोक्ता एक अतिरिक्त इकाई तभी खरीदेगा जब उसकी कीमत कम हो। यही कारण है कि मांग वक्र नीचे की ओर ढलान वाला होता है।

» उपयोगिता: क्रमवाचक दृष्टिकोण और अनधिमान वक्र

प्रश्न 21 (आसान). क्रमवाचक दृष्टिकोण में उपयोगिता को संख्याओं में मापा जाता है या क्रम दिया जाता है?

उत्तर – क्रम दिया जाता है।

प्रश्न 22 (आसान). अनधिमान वक्र पर सभी बिंदु क्या दर्शाते हैं?

उत्तर – समान स्तर की संतुष्टि।

प्रश्न 23 (मध्यम). क्या अनधिमान वक्र पर उपभोक्ता अपने अधिमानों को संख्यात्मक मूल्य देता है?

उत्तर – नहीं, वह केवल विभिन्न बंडलों को अपनी पसंद के आधार पर वरीयता या क्रम देता है।

प्रश्न 24 (कठिन). अनधिमान वक्र का ढलान बाईं से दाईं ओर नीचे की ओर क्यों होता है? (संकेत: MRS)

उत्तर – यह घटती सीमांत प्रतिस्थापन दर (MRS) के कारण होता है, जिसका अर्थ है कि एक वस्तु की अतिरिक्त इकाई प्राप्त करने के लिए, उपभोक्ता को दूसरी वस्तु की कम और कम इकाइयाँ छोड़ने को तैयार होना पड़ता है, ताकि संतुष्टि का स्तर समान रहे।

» सीमांत प्रतिस्थापन दर (MRS)

प्रश्न 25 (आसान). अगर आप 5 सेब के बदले 1 संतरा लेने को तैयार हैं, तो MRS क्या है?

उत्तर – $MRS = 5/1 = 5$

प्रश्न 26 (आसान). MRS क्या बताता है?

उत्तर – यह बताता है कि एक वस्तु की कितनी मात्रा का त्याग करने को उपभोक्ता तैयार है, ताकि उसे दूसरी वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई मिल सके और संतुष्टि का स्तर समान रहे।

प्रश्न 27 (मध्यम). हासमान सीमांत प्रतिस्थापन दर का नियम क्या है?

उत्तर – यह नियम बताता है कि जैसे-जैसे उपभोक्ता एक वस्तु की अधिक इकाइयाँ प्राप्त करता जाता है, वह दूसरी वस्तु की कम और कम इकाइयों का त्याग करने को तैयार होता है।

प्रश्न 28 (कठिन). अनधिमान वक्र उत्तल क्यों होता है? इसमें 'हासमान MRS' का क्या योगदान है?

उत्तर – अनधिमान वक्र मूल बिंदु की ओर उत्तल (convex) इसलिए होता है क्योंकि सीमांत प्रतिस्थापन दर घटती जाती है। जैसे-जैसे उपभोक्ता के पास एक वस्तु की मात्रा बढ़ती है, उसकी उस वस्तु के प्रति सीमांत उपयोगिता कम होती जाती है, और इसलिए वह दूसरी वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई के लिए कम और कम मात्रा में पहली वस्तु का त्याग करने को तैयार होता है। यही घटती दर वक्र को उत्तल बनाती है।

» अनधिमान वक्रों की विशेषताएँ

प्रश्न 29 (आसान). क्या अनधिमान वक्रों का ढलान ऊपर की ओर होता है या नीचे की ओर?

उत्तर – अनधिमान वक्रों का ढलान नीचे की ओर होता है।

प्रश्न 30 (आसान). क्या एक ऊँचा अनधिमान वक्र कम संतुष्टि दिखाता है या ज़्यादा?

उत्तर – एक ऊँचा अनधिमान वक्र ज़्यादा संतुष्टि दिखाता है।

प्रश्न 31 (मध्यम). दो अनधिमान वक्र एक-दूसरे को क्यों नहीं काटते हैं, संक्षेप में समझाएँ।

उत्तर – दो अनधिमान वक्र एक-दूसरे को नहीं काटते क्योंकि अगर वे काटते हैं, तो कटान बिंदु पर दो अलग-अलग संतुष्टि स्तरों का विरोधाभास उत्पन्न होगा, जो तर्कसंगत नहीं है।

प्रश्न 32 (कठिन). यदि कोई अनधिमान वक्र अक्षों को छू जाए, तो इससे उपभोक्ता की पसंद के बारे में क्या पता चलेगा?

उत्तर – यदि कोई अनधिमान वक्र किसी अक्ष को छूता है, तो इसका मतलब होगा कि उपभोक्ता केवल एक ही वस्तु का उपभोग कर रहा है (दूसरी वस्तु की मात्रा शून्य है), जो आमतौर पर यह बताता है कि उपभोक्ता को दोनों वस्तुओं के मिश्रण से नहीं बल्कि केवल एक वस्तु से ही संतुष्टि मिल रही है।

» उपभोक्ता का बजट: बजट सेट और बजट रेखा

प्रश्न 33 (आसान). यदि एक उपभोक्ता के पास 100 रुपये हैं और वह केवल कलम (5 रुपये प्रति कलम) खरीद सकता है, तो वह अधिकतम कितनी कलम खरीद पाएगा?

उत्तर – 20 कलम

प्रश्न 34 (आसान). बजट रेखा का ढाल (Slope) क्या दर्शाता है?

उत्तर – दो वस्तुओं के बीच कीमत का अनुपात।

प्रश्न 35 (मध्यम). एक उपभोक्ता की आय 200 रुपये है। वस्तु A की कीमत 20 रुपये और वस्तु B की कीमत 10 रुपये है। बजट रेखा का समीकरण लिखें।

उत्तर – $20A + 10B = 200$

प्रश्न 36 (कठिन). यदि उपभोक्ता की आय 300 रुपये है, वस्तु X की कीमत 30 रुपये और वस्तु Y की कीमत 15 रुपये है। अगर वह X की 5 इकाइयां खरीदता है, तो Y की कितनी इकाइयां खरीद पाएगा?

उत्तर – Y की 10 इकाइयां

» बजट रेखा की प्रवणता और इसमें बदलाव

प्रश्न 37 (आसान). यदि वस्तु X की कीमत ₹5 और वस्तु Y की कीमत ₹10 हो, तो बजट रेखा की प्रवणता क्या होगी?

उत्तर – -0.5

प्रश्न 38 (आसान). अगर उपभोक्ता की आय बढ़ जाए तो बजट रेखा किस दिशा में खिसकेगी?

उत्तर – समानांतर रूप से बाहर की ओर

प्रश्न 39 (मध्यम). उपभोक्ता की आय ₹200 है। वस्तु A की कीमत ₹20 और वस्तु B की कीमत ₹40 है। बजट रेखा की प्रवणता क्या है? यदि वस्तु A की कीमत बढ़कर ₹25 हो जाए तो बजट रेखा कैसे प्रभावित होगी?

उत्तर – प्रवणता पहले -0.5 होगी। वस्तु A की कीमत बढ़ने पर बजट रेखा Y-अक्ष पर स्थिर रहते हुए X-अक्ष की ओर अंदर की तरफ घूम जाएगी (अधिक प्रवण हो जाएगी)।

प्रश्न 40 (कठिन). एक उपभोक्ता के पास ₹150 हैं। वह वस्तु M (₹15 प्रति इकाई) और वस्तु N (₹25 प्रति इकाई) खरीदता है। बजट रेखा की प्रवणता ज्ञात करें। यदि वस्तु M की कीमत घटकर ₹10 हो जाए और वस्तु N की कीमत ₹30 हो जाए, जबकि आय वही रहे, तो नई प्रवणता क्या होगी और बजट रेखा कैसे बदलेगी?

उत्तर – पुरानी प्रवणता = $-15/25 = -0.6$ । नई प्रवणता = $-10/30 = -0.33$ । बजट रेखा Y-अक्ष पर स्थिर रहेगी, लेकिन X-अक्ष पर बाहर की ओर घूमेगी (कम प्रवण हो जाएगी), क्योंकि वस्तु M सस्ती हुई है। साथ ही, N भी महंगी हुई है, जिससे Y-अक्ष पर इसका इंटरसेप्ट भी बदल जाएगा।

» उपभोक्ता का इष्टतम चयन (क्रमवाचक विश्लेषण)

प्रश्न 41 (आसान). उपभोक्ता का इष्टतम चयन बिंदु कहाँ स्थित होता है?

उत्तर – बजट रेखा पर और अनधिमान वक्र को स्पर्श करते हुए।

प्रश्न 42 (आसान). अगर बजट रेखा एक अनधिमान वक्र को काटती है, तो क्या वह इष्टतम बिंदु होगा?

उत्तर – नहीं, वह इष्टतम बिंदु नहीं होगा।

प्रश्न 43 (मध्यम). उपभोक्ता इष्टतम बिंदु पर किस अनधिमान वक्र को चुनता है – सबसे नीचे वाले को, बीच वाले को, या सबसे ऊपर वाले को?

उत्तर – सबसे ऊपर वाले अनधिमान वक्र को जिसे उसकी बजट रेखा स्पर्श करती है।

प्रश्न 44 (कठिन). इष्टतम चयन बिंदु पर, प्रतिस्थापन की सीमांत दर (MRS) और कीमत अनुपात (P_x/P_y) के बीच क्या संबंध होता है?

उत्तर – इष्टतम बिंदु पर, प्रतिस्थापन की सीमांत दर (MRS) कीमत अनुपात (P_x/P_y) के बराबर होती है।

» मांग वक्र तथा मांग का नियम

प्रश्न 45 (आसान). मांग वक्र किन दो चीजों के बीच संबंध दिखाता है?

उत्तर – कीमत और मांगी गई मात्रा

प्रश्न 46 (आसान). अगर किसी वस्तु की कीमत घट जाती है, तो मांग का नियम क्या कहता है?

उत्तर – मांगी गई मात्रा बढ़ जाएगी।

प्रश्न 47 (मध्यम). मांग वक्र का ढलान (slope) कैसा होता है और क्यों?

उत्तर – मांग वक्र का ढलान ऋणात्मक (negative) होता है क्योंकि कीमत और मांगी गई मात्रा के बीच विपरीत संबंध होता है।

प्रश्न 48 (कठिन). क्या कभी ऐसा हो सकता है कि किसी चीज़ की कीमत बढ़े और उसकी मांग भी बढ़ जाए? अगर हाँ, तो ऐसे मामलों को क्या कहते हैं?

उत्तर – हाँ, कुछ दुर्लभ मामलों में ऐसा हो सकता है, जैसे 'गिफिन वस्तुएँ' या 'स्टेटस सिंबल' वाली वस्तुएँ। इन्हें मांग के नियम का अपवाद कहते हैं।

» अनधिमान वक्रों से मांग वक्र की व्युत्पत्ति

प्रश्न 49 (आसान). मांग वक्र बनाने के लिए किन दो मुख्य औजारों का उपयोग किया जाता है?

उत्तर – अनधिमान वक्र और बजट बाधा।

प्रश्न 50 (आसान). अगर किसी वस्तु की कीमत घटती है, तो उपभोक्ता का इष्टतम चयन (खरीदी गई मात्रा) पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर – इष्टतम चयन बदल जाता है, और उपभोक्ता आमतौर पर उस वस्तु की अधिक मात्रा खरीदने का चुनाव करता है।

प्रश्न 51 (मध्यम). कीमत में कमी से होने वाले 'प्रतिस्थापन प्रभाव' और 'आय प्रभाव' में क्या अंतर है? संक्षेप में बताएं।

उत्तर – प्रतिस्थापन प्रभाव बताता है कि सस्ती होने पर उपभोक्ता महंगी वस्तु की जगह उस वस्तु को ज़्यादा खरीदता है। आय प्रभाव बताता है कि कीमत घटने से उपभोक्ता की वास्तविक क्रय शक्ति बढ़ जाती है, जिससे वह दोनों वस्तुओं को ज़्यादा खरीद सकता है।

प्रश्न 52 (कठिन). एक काल्पनिक उदाहरण दें जहाँ किसी वस्तु की कीमत में कमी के बावजूद उसका मांग वक्र नीचे की ओर ढलवां न हो। ऐसा किस प्रकार की वस्तु में हो सकता है?

उत्तर – यह 'गिफिन वस्तु' के मामले में हो सकता है। गिफिन वस्तुएँ वो होती हैं जहाँ आय प्रभाव, प्रतिस्थापन प्रभाव से ज़्यादा मज़बूत होता है और कीमत घटने पर भी लोग उसकी कम मात्रा खरीदते हैं, क्योंकि उनकी क्रय शक्ति बढ़ने से वे बेहतर वस्तुओं पर शिफ्ट हो जाते हैं। जैसे, बहुत गरीब लोग मोटे अनाज की कीमत घटने पर भी उसे कम खरीद सकते हैं क्योंकि वे अब अच्छी गुणवत्ता वाले चावल या गेहूं खरीद सकते हैं।

» सामान्य और निम्नस्तरीय वस्तुएँ

प्रश्न 53 (आसान). अगर मेरी आय बढ़ने पर मैं ट्यूशन लेना बंद कर दूँ और स्कूल की कोचिंग में ही पढ़ूँ, तो ट्यूशन _____ वस्तु है?

उत्तर – निम्नस्तरीय वस्तु

प्रश्न 54 (आसान). जब मेरी तनख्वाह बढ़ी, तो मैंने सब्ज़ियां मंडी से लेने की बजाय मॉल से लेनी शुरू कर दी। मंडी की सब्ज़ियां मेरे लिए क्या थीं?

उत्तर – निम्नस्तरीय वस्तु

प्रश्न 55 (मध्यम). एक उपभोक्ता की आय ₹20,000 है और वह महीने में 10 लीटर दूध खरीदता है। उसकी आय ₹25,000 हो जाती है और वह अब 12 लीटर दूध खरीदता है। दूध किस प्रकार की वस्तु है?

उत्तर – दूध सामान्य वस्तु है।

प्रश्न 56 (कठिन). रमेश पहले सस्ती ब्रांड की जींस खरीदता था। जब उसकी आय बढ़ गई, तो उसने महंगी ब्रांड की जींस खरीदना शुरू कर दिया और सस्ती ब्रांड की जींस खरीदना बंद कर दिया। उसके लिए सस्ती ब्रांड की जींस और महंगी ब्रांड की जींस किस प्रकार की वस्तुएँ हैं?

उत्तर – सस्ती ब्रांड की जींस निम्नस्तरीय वस्तु है और महंगी ब्रांड की जींस सामान्य वस्तु है।

» स्थानापन्न और पूरक वस्तुएँ

प्रश्न 57 (आसान). अगर पेन की कीमत बहुत बढ़ जाए, तो क्या स्याही की मांग बढ़ेगी या घटेगी? (पेन और स्याही पूरक वस्तुएँ हैं)

उत्तर – घटेगी

प्रश्न 58 (आसान). अगर बस के किराए कम हो जाएं, तो क्या ट्रेन से यात्रा की मांग बढ़ेगी या घटेगी? (बस और ट्रेन स्थानापन्न हैं)

उत्तर – घटेगी

प्रश्न 59 (मध्यम). आप मैगी के शौकीन हैं। अगर अचानक बाजार में 'यिप्पी नूडल्स' बहुत सस्ती हो जाएं, तो मैगी की मांग पर क्या असर पड़ेगा?

उत्तर – मैगी की मांग घटेगी क्योंकि यिप्पी नूडल्स एक सस्ता स्थानापन्न विकल्प बन गई हैं।

प्रश्न 60 (कठिन). सोचिए, अगर कार खरीदने पर पेट्रोल सरकार मुफ्त कर दे (सिर्फ सोचने के लिए), तो कार की बिक्री और कार के टायरों की बिक्री पर क्या असर पड़ेगा? कौन-सी वस्तु स्थानापन्न है और कौन-सी पूरक?

उत्तर – इस स्थिति में, कार और पेट्रोल 'पूरक' वस्तुएँ हैं। पेट्रोल मुफ्त होने से कार खरीदने की मांग बहुत बढ़ जाएगी। क्योंकि ज्यादा कारें बिकेंगी और चलेंगी, तो कार के टायरों की मांग भी बढ़ जाएगी (कार के टायर भी कार के पूरक हैं)। पेट्रोल की कोई स्थानापन्न वस्तु यहाँ नहीं है, लेकिन अगर हम कार को देखें, तो हो सकता है कि लोग अब टू-व्हीलर की जगह कार ज्यादा खरीदें, तो उस स्थिति में कार और टू-व्हीलर 'स्थानापन्न' हो सकते हैं।

» मांग वक्र में शिफ्ट और मांग वक्र पर संचलन

प्रश्न 61 (आसान). अगर पेन की कीमत कम हो जाती है, तो यह 'मांग वक्र पर संचलन' है या 'मांग वक्र में शिफ्ट'?

उत्तर – मांग वक्र पर संचलन

प्रश्न 62 (आसान). फिल्म देखने का मन है, और आपके दोस्त ने बोला कि वह फ्री में टिकट दे देगा। अब आप फिल्म देखने जाएंगे, यह क्या है?

उत्तर – मांग वक्र में शिफ्ट (क्योंकि कीमत के अलावा 'दोस्त का ऑफर' कारक है)

प्रश्न 63 (मध्यम). गर्मी के मौसम में एसी की मांग बढ़ जाती है, भले ही उसकी कीमत में बदलाव न हो। यह किस प्रकार का बदलाव है और क्यों?

उत्तर – यह 'मांग वक्र में शिफ्ट' है, क्योंकि एसी की मांग कीमत के बजाय मौसम (पसंद/रुचि) में बदलाव के कारण बढ़ी है।

प्रश्न 64 (कठिन). अगर दूध की कीमत बढ़ जाए तो दही की मांग पर क्या असर पड़ेगा? इसे आप मांग वक्र में संचलन या शिफ्ट कैसे समझाएंगे?

उत्तर – दूध की कीमत बढ़ने पर, दूध की मांग में 'संचलन' होगा (दूध का वक्र ऊपर की ओर संचलित होगा)। क्योंकि दूध दही बनाने में इस्तेमाल होता है, इसलिए दही की उत्पादन लागत बढ़ जाएगी, और यदि दही की कीमत नहीं भी बढ़ती तो भी उसकी मांग पर असर पड़ेगा, या दही की कीमत बढ़ानी पड़ सकती है। दूध महंगा होने से दही की मांग पर नकारात्मक असर होगा, जिससे दही के मांग वक्र में 'शिफ्ट' बाईं ओर होगा (अन्य संबंधित वस्तु की कीमत में बदलाव के कारण)।

» बाजार मांग

प्रश्न 65 (आसान). यदि कीमत 8 रुपये है, और उपभोक्ता A की मांग 7 इकाई व उपभोक्ता B की मांग 5 इकाई है, तो बाज़ार मांग क्या होगी?

उत्तर – 12 इकाई (7+5)

प्रश्न 66 (आसान). बाज़ार मांग को परिभाषित करें।

उत्तर – किसी विशेष कीमत पर सभी उपभोक्ताओं की कुल मांग।

प्रश्न 67 (मध्यम). एक बाज़ार में तीन उपभोक्ता हैं। यदि किसी वस्तु की कीमत 10 रुपये है, तो उनकी मांग क्रमशः 8, 5, और 12 इकाइयाँ हैं। बाज़ार मांग ज्ञात करें।

उत्तर – 25 इकाई (8+5+12)

प्रश्न 68 (कठिन). यदि उपभोक्ता A की मांग $Q_A = 20 - 2P$ और उपभोक्ता B की मांग $Q_B = 30 - 3P$ है। जब कीमत (P) = 6 रुपये हो, तो बाज़ार मांग वक्र क्या होगा?

उत्तर – पहले $P=6$ पर दोनों की मांग निकालें: $Q_A = 20 - 2(6) = 8$, $Q_B = 30 - 3(6) = 12$ । कुल बाज़ार मांग $Q_m = Q_A + Q_B = 8 + 12 = 20$ इकाई। बाज़ार मांग समीकरण $Q_m = (20-2P) + (30-3P) = 50 - 5P$ होगी। इसलिए, जब $P=6$, $Q_m = 50 - 5(6) = 50 - 30 = 20$ इकाई।

» मांग की लोच: गणना और व्याख्या

प्रश्न 69 (आसान). अगर किसी वस्तु की कीमत 5% बढ़ती है और उसकी मांग 10% घटती है, तो लोच क्या होगी?

उत्तर – 2

प्रश्न 70 (आसान). अगर कीमत में 10% कमी से मांग में 5% वृद्धि होती है, तो लोच क्या होगी?

उत्तर – 0.5

प्रश्न 71 (मध्यम). एक दुकान में बिस्कुट का पैकेट 20 रुपये का था और 200 पैकेट बिकते थे। कीमत बढ़कर 22 रुपये हो गई और बिक्री 180 पैकेट रह गई। मांग की लोच बताओ।

उत्तर – मात्रा में % परिवर्तन = $(180-200)/200 * 100 = -10\%$. कीमत में % परिवर्तन = $(22-20)/20 * 100 = 10\%$. लोच = $-10\%/10\% = -1$.

प्रश्न 72 (कठिन). एक कंपनी अपनी नई कार की कीमत 15 लाख से 14.5 लाख करने का सोच रही है। उन्हें उम्मीद है कि इससे बिक्री 500 यूनिट से बढ़कर 550 यूनिट हो जाएगी। इस स्थिति में मांग की लोच क्या होगी, और क्या यह कंपनी के लिए अच्छा कदम होगा अगर वे कुल राजस्व बढ़ाना चाहते हैं?

उत्तर – कीमत में % परिवर्तन = $(14.5 - 15) / 15 * 100 = -3.33\%$. मात्रा में % परिवर्तन = $(550 - 500) / 500 * 100 = 10\%$. लोच = $10\% / -3.33\% = -3$. कंपनी के लिए यह अच्छा कदम होगा क्योंकि लोच 1 से ज्यादा (3) है, जिसका मतलब है कि कीमत कम करने से कुल राजस्व बढ़ेगा।

» रैखिक मांग वक्र की लोच और ज्यामितीय माप

प्रश्न 73 (आसान). एक रैखिक मांग वक्र के सबसे ऊपरी सिरे पर लोच का मान क्या होता है?

उत्तर – अनंत (∞)

प्रश्न 74 (आसान). एक रैखिक मांग वक्र के सबसे निचले सिरे पर लोच का मान क्या होता है?

उत्तर – शून्य (0)

प्रश्न 75 (मध्यम). अगर एक रैखिक मांग वक्र पर कोई बिंदु ऐसा है कि उसके नीचे का खंड, उसके ऊपर के खंड से दोगुना है, तो उस बिंदु पर लोच का मान क्या होगा?

उत्तर – 2 (लोच = नीचे का खंड / ऊपर का खंड = $2/1 = 2$)

प्रश्न 76 (कठिन). एक रैखिक मांग वक्र की लंबाई 10 सेमी है। यदि किसी बिंदु पर मांग की लोच 0.5 है, तो उस बिंदु के नीचे और ऊपर के खंडों की लंबाई क्या होगी?

उत्तर – अगर लोच = 0.5, तो नीचे का खंड / ऊपर का खंड = $0.5/1$ । यानी नीचे का खंड अगर 'x' है तो ऊपर का खंड '2x' होगा। कुल लंबाई = $x + 2x = 3x = 10$ सेमी। तो $x = 10/3$ सेमी। नीचे का खंड = $10/3$ सेमी (लगभग 3.33 सेमी), और ऊपर का खंड = $2 * (10/3) = 20/3$ सेमी (लगभग 6.67 सेमी)।

» स्थिर लोच मांग वक्र और इसके प्रकार

प्रश्न 77 (आसान). अगर किसी वस्तु की कीमत में थोड़ा सा भी बदलाव उसकी मांग को अनंत तक बदल दे, तो यह कौन सा वक्र है?

उत्तर – पूर्णतया लोचदार मांग वक्र

प्रश्न 78 (आसान). वह मांग वक्र जिसकी लोच हर बिंदु पर 1 होती है, उसे क्या कहते हैं?

उत्तर – इकाई लोचदार मांग वक्र

प्रश्न 79 (मध्यम). पूर्णतया लोचहीन मांग वक्र को ग्राफ पर कैसे दिखाया जाता है?

उत्तर – एक सीधी ऊर्ध्वाधर (vertical) रेखा से।

प्रश्न 80 (कठिन). समझाइए कि पूर्णतया लोचदार मांग वक्र में कीमत का क्या महत्व है, और यह बाजार में किस स्थिति को दर्शाता है?

उत्तर – पूर्णतया लोचदार मांग वक्र में कीमत का बहुत कम महत्व होता है, क्योंकि एक निश्चित कीमत पर मांग अनंत होती है, और कीमत में जरा सा भी बदलाव मांग को शून्य कर देता है। यह स्थिति पूर्ण प्रतियोगिता वाले बाजार को दर्शाती है जहाँ एक ही वस्तु के बहुत सारे विक्रेता होते हैं और कोई भी अकेला विक्रेता कीमत को प्रभावित नहीं कर पाता।

» मांग की कीमत लोच को निर्धारित करने वाले कारक

प्रश्न 81 (आसान). निम्नलिखित में से किसकी मांग बेलोचदार होने की संभावना है: दवाइयाँ या टेलीविजन?

उत्तर – दवाइयाँ

प्रश्न 82 (आसान). अगर साबुन की कीमत बढ़ती है और लोग उसकी जगह दूसरे ब्रांड का साबुन खरीदना शुरू कर देते हैं, तो साबुन की मांग कैसी होगी - लोचदार या बेलोचदार?

उत्तर – लोचदार

प्रश्न 83 (मध्यम). पेट्रोल और हवाई जहाज की यात्रा में से किसकी मांग ज़्यादा लोचदार होगी और क्यों?

उत्तर – हवाई जहाज की यात्रा की मांग ज़्यादा लोचदार होगी, क्योंकि इसके कई स्थानापन्न (जैसे ट्रेन, बस) उपलब्ध हैं और यह आवश्यक नहीं बल्कि एक सुविधा या विलासिता है। पेट्रोल एक आवश्यक वस्तु है और इसके निकट स्थानापन्न आसानी से नहीं मिलते।

प्रश्न 84 (कठिन). किसी विशेष ब्रांड की दाल की मांग, सामान्य दाल की मांग से ज़्यादा लोचदार क्यों हो सकती है?

उत्तर – किसी विशेष ब्रांड की दाल की मांग ज़्यादा लोचदार हो सकती है क्योंकि उसके कई निकट स्थानापन्न उपलब्ध हैं—बाकी ब्रांड की दालें। अगर एक ब्रांड महंगा होता है, तो ग्राहक आसानी से दूसरे ब्रांड पर जा सकते हैं। लेकिन सामान्य दाल की मांग कम लोचदार होती है क्योंकि हमें दाल तो खानी ही है, कोई सीधा स्थानापन्न नहीं है।

» लोच और व्यय के बीच संबंध

प्रश्न 85 (आसान). यदि दूध की कीमत बढ़ जाती है और लोग थोड़ा कम दूध खरीदते हैं, लेकिन दूध पर उनका कुल खर्च बढ़ जाता है। तो दूध की मांग कैसी है – लोचदार या बेलोचदार?

उत्तर – बेलोचदार

प्रश्न 86 (आसान). अगर सिनेमा हॉल में टिकट की कीमत कम करने पर कुल टिकट बिक्री से होने वाली आय बढ़ जाती है, तो टिकट की मांग कैसी है?

उत्तर – लोचदार

प्रश्न 87 (मध्यम). एक दुकानदार ने अपने समोसे की कीमत 10 रुपये से बढ़ाकर 12 रुपये कर दी। पहले वो रोज़ 200 समोसे बेचता था और अब 150 समोसे बेच रहा है। बताओ कुल व्यय पर क्या प्रभाव पड़ा और समोसे की मांग की लोच क्या है?

उत्तर – पहले कुल व्यय = $10 * 200 = 2000$ रुपये। अब कुल व्यय = $12 * 150 = 1800$ रुपये। कुल व्यय कम हो गया, इसलिए मांग लोचदार है।

प्रश्न 88 (कठिन). एक स्टेशनरी की दुकान पर पेन की कीमत में 20% की वृद्धि हुई, जिससे कुल राजस्व 10% कम हो गया। मांग की लोच (Ed) का मान ज्ञात कीजिए और बताइए यह किस प्रकार की लोच है?

उत्तर – चूंकि कीमत बढ़ने पर कुल राजस्व कम हुआ है, तो मांग लोचदार है ($E_d > 1$)। मान निकालने के लिए, माना कीमत P और मात्रा Q थी। नया व्यय = $(P * 1.2) * (Q * (1 - x/100)) = (P*Q) * 0.90$ । हल करने पर $x = 25\%$ आएगा। $E_d = 25\%/20\% = 1.25$. (लोचदार)

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. मान लीजिए एक उपभोक्ता के पास ₹100 हैं। उसे केले (Banana) और आम (Mango) खरीदने हैं। केले की कीमत ₹10 प्रति इकाई है और आम की कीमत ₹20 प्रति इकाई है। उपभोक्ता अलग-अलग 'बंडल' कैसे बना सकता है?

› पहला बंडल: उपभोक्ता 10 केले खरीद सकता है। $(10 \text{ केले} * ₹10 = ₹100)$ । इस स्थिति में आम 0 होंगे। बंडल = (10, 0)

› दूसरा बंडल: उपभोक्ता 5 आम खरीद सकता है। $(5 \text{ आम} * ₹20 = ₹100)$ । इस स्थिति में केले 0 होंगे। बंडल = (0, 5)

› तीसरा बंडल: उपभोक्ता 4 केले और 3 आम खरीद सकता है। $(4 \text{ केले} * ₹10 = ₹40) + (3 \text{ आम} * ₹20 = ₹60)$ । कुल ₹100। बंडल = (4, 3)

› चौथा बंडल: उपभोक्ता 6 केले और 2 आम खरीद सकता है। $(6 \text{ केले} * ₹10 = ₹60) + (2 \text{ आम} * ₹20 = ₹40)$ । कुल ₹100। बंडल = (6, 2)

उत्तर – उपभोक्ता अपने ₹100 में (10,0), (0,5), (4,3), (6,2) जैसे अलग-अलग बंडल खरीद सकता है। इन बंडलों में से कौन सा बंडल उसे सबसे ज़्यादा संतुष्टि देगा, यही हम उपभोक्ता व्यवहार में समझते हैं।

उदाहरण 2. मान लीजिए, एक विद्यार्थी को पहला समोसा खाने से 60 इकाई उपयोगिता मिलती है। दूसरा समोसा खाने से 40 इकाई और तीसरा समोसा खाने से 20 इकाई उपयोगिता मिलती है। कुल उपयोगिता कितनी होगी?

› पहला समोसा: 60 इकाई उपयोगिता

› दूसरा समोसा: 40 इकाई उपयोगिता

› तीसरा समोसा: 20 इकाई उपयोगिता

› कुल उपयोगिता = पहले समोसे की उपयोगिता + दूसरे समोसे की उपयोगिता + तीसरे समोसे की उपयोगिता

› कुल उपयोगिता = $60 + 40 + 20$

उत्तर – कुल उपयोगिता = 120 इकाई

उदाहरण 3. मान लीजिए एक व्यक्ति को सेब खाने से मिलने वाली उपयोगिता नीचे दी गई है: 1 सेब से कुल उपयोगिता = 10; 2 सेब से कुल उपयोगिता = 18; 3 सेब से कुल उपयोगिता = 24. तो दूसरे और तीसरे सेब से मिलने वाली सीमांत उपयोगिता ज्ञात कीजिए।

› दूसरे सेब से सीमांत उपयोगिता (MU_2) = कुल उपयोगिता (TU_2) - कुल उपयोगिता (TU_1) = $18 - 10 = 8$.

› तीसरे सेब से सीमांत उपयोगिता (MU_3) = कुल उपयोगिता (TU_3) - कुल उपयोगिता (TU_2) = $24 - 18 = 6$.

उत्तर – दूसरे सेब से सीमांत उपयोगिता 8 इकाई है, और तीसरे सेब से सीमांत उपयोगिता 6 इकाई है।

उदाहरण 4. मान लीजिए एक व्यक्ति सेब खा रहा है। पहले सेब से उसे 10 यूनिट उपयोगिता मिलती है। दूसरे से 8, तीसरे से 6, चौथे से 4, पाँचवे से 2 और छठे सेब से 0 यूनिट उपयोगिता मिलती है। इस उदाहरण से सीमांत उपयोगिता अनुसूची बनाओ और बताओ कि कुल उपयोगिता अधिकतम कब होगी?

› पहले हम एक तालिका बनाते हैं जिसमें सेब की संख्या, सीमांत उपयोगिता और कुल उपयोगिता होगी।

› पहला सेब: सीमांत उपयोगिता (MU) = 10, कुल उपयोगिता (TU) = 10

› दूसरा सेब: $MU = 8$, $TU = 10 + 8 = 18$

› तीसरा सेब: $MU = 6$, $TU = 18 + 6 = 24$

› चौथा सेब: $MU = 4$, $TU = 24 + 4 = 28$

› पाँचवा सेब: $MU = 2$, $TU = 28 + 2 = 30$

› छठा सेब: $MU = 0$, $TU = 30 + 0 = 30$

› इस अनुसूची से पता चलता है कि जब सीमांत उपयोगिता शून्य होती है (छठे सेब पर), तब कुल उपयोगिता अधिकतम होती है (30 यूनिट)। उसके बाद, यदि और सेब खाए जाएं तो सीमांत उपयोगिता ऋणात्मक हो सकती है और कुल उपयोगिता घटने लगेगी।

उत्तर – कुल उपयोगिता छठे सेब पर अधिकतम (30 यूनिट) होगी, जब सीमांत उपयोगिता 0 है।

उदाहरण 5. मान लीजिए एक व्यक्ति केले की इकाइयां खरीदता है। पहले केले से 12 यूटिल्स, दूसरे से 6 यूटिल्स, तीसरे से 4 यूटिल्स और चौथे से 2 यूटिल्स की सीमांत उपयोगिता मिलती है। केले की कीमत 4 रुपये प्रति इकाई है और व्यक्ति का उद्देश्य अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करना है। वह कितने केले खरीदेगा?

› पहला केला: सीमांत उपयोगिता 12 यूटिल्स। अगर 1 यूटिल = 1 रुपया मानें, तो वह 12 रुपये तक देने को तैयार है। कीमत 4 रुपये है, तो वह पहला केला खरीदेगा।

› दूसरा केला: सीमांत उपयोगिता 6 यूटिल्स। वह 6 रुपये तक देने को तैयार है। कीमत 4 रुपये है, तो वह दूसरा केला भी खरीदेगा।

› तीसरा केला: सीमांत उपयोगिता 4 यूटिल्स। वह 4 रुपये तक देने को तैयार है। कीमत 4 रुपये है, तो वह तीसरा केला भी खरीदेगा।

› चौथा केला: सीमांत उपयोगिता 2 यूटिल्स। वह 2 रुपये तक ही देने को तैयार है, लेकिन कीमत 4 रुपये है। यहाँ उसकी उपयोगिता कीमत से कम है, तो वह चौथा केला नहीं खरीदेगा।

उत्तर – व्यक्ति 3 केले खरीदेगा।

उदाहरण 6. एक उपभोक्ता को दो वस्तुएँ, सेब और संतरे, पसंद हैं। उसे निम्नलिखित बंडल दिए गए हैं: बंडल A (10 सेब, 2 संतरे), बंडल B (7 सेब, 3 संतरे), बंडल C (5 सेब, 4 संतरे)। यदि उपभोक्ता इन तीनों बंडलों से समान संतुष्टि प्राप्त करता है, तो इन्हें अनधिमान वक्र पर कैसे दर्शाएँगे?

› पहला चरण: एक ग्राफ बनाएँ जिसमें X-अक्ष पर सेब की मात्रा और Y-अक्ष पर संतरे की मात्रा हो।

› दूसरा चरण: बंडल A (10 सेब, 2 संतरे) को ग्राफ पर एक बिंदु के रूप में चिह्नित करें।

› तीसरा चरण: बंडल B (7 सेब, 3 संतरे) को भी ग्राफ पर एक बिंदु के रूप में चिह्नित करें।

› चौथा चरण: बंडल C (5 सेब, 4 संतरे) को भी ग्राफ पर एक बिंदु के रूप में चिह्नित करें।

› पाँचवाँ चरण: क्योंकि इन सभी बंडलों से उपभोक्ता को समान संतुष्टि मिलती है, इन तीनों बिंदुओं को एक चिकनी रेखा से जोड़ दें। यही रेखा अनधिमान वक्र कहलाएगी। यह वक्र नीचे की ओर झुका होगा और मूल-बिंदु की ओर उत्तल होगा।

उत्तर – ग्राफ पर, इन तीनों बिंदुओं (A, B, C) को जोड़ने वाला एक वक्र, जो समान संतुष्टि को दर्शाता है, अनधिमान वक्र होगा।

उदाहरण 7. एक उपभोक्ता के पास 15 आम और 1 केला है। वह एक और केला लेने के लिए 3 आम छोड़ता है। फिर वह एक और केला लेने के लिए 2 आम छोड़ता है। और आखिर में, एक और केला लेने के लिए 1 आम छोड़ता है। हर स्थिति में MRS क्या है और 'हासमान MRS' क्या दर्शाता है?

› पहला MRS: जब उपभोक्ता 1 केले के लिए 3 आम छोड़ता है। यहाँ Y (आम) = 3, X (केला) = 1. तो $MRS = 3/1 = 3$.

› दूसरा MRS: जब उपभोक्ता अगले 1 केले के लिए 2 आम छोड़ता है। यहाँ Y (आम) = 2, X (केला) = 1. तो $MRS = 2/1 = 2$.

› तीसरा MRS: जब उपभोक्ता अगले 1 केले के लिए 1 आम छोड़ता है। यहाँ Y (आम) = 1, X (केला) = 1. तो $MRS = 1/1 = 1$.

› निष्कर्ष: हम देख सकते हैं कि जैसे-जैसे केले की मात्रा बढ़ती जा रही है (1 से 2, 2 से 3, 3 से 4), आमों का त्याग कम होता जा रहा है (3 से 2, 2 से 1)। यही हासमान MRS है।

उत्तर – पहले $MRS = 3$, दूसरे $MRS = 2$, तीसरे $MRS = 1$. हासमान MRS का मतलब है कि उपभोक्ता जैसे-जैसे एक वस्तु की ज़्यादा इकाइयाँ प्राप्त करता जाता है, वह दूसरी वस्तु की कम-से-कम इकाइयों का त्याग करने को तैयार होता है।

उदाहरण 8. दो अनधिमान वक्रों IC1 और IC2 को इस तरह बनाएँ कि वे एक-दूसरे को काटते हों, और फिर समझाएँ कि ऐसा क्यों नहीं हो सकता।

› सबसे पहले, एक ग्राफ पेपर पर X-अक्ष और Y-अक्ष बनाएँ। X-अक्ष पर वस्तु X और Y-अक्ष पर वस्तु Y की मात्रा दिखाएँ।

› अब, एक अनधिमान वक्र IC1 बनाएँ जो नीचे की ओर ढलवा हो।

› दूसरा अनधिमान वक्र IC2 बनाएँ जो IC1 को एक बिंदु (मान लो A) पर काटता हो।

› IC1 पर एक और बिंदु B लें (जो A के अलावा हो)। IC2 पर एक और बिंदु C लें (जो A के अलावा हो)।

› अब, यह देखो कि बिंदु A, IC1 और IC2 दोनों पर है। इसका मतलब है कि A, B के बराबर संतुष्टि देता है (क्योंकि दोनों IC1 पर हैं) और A, C के बराबर संतुष्टि देता है (क्योंकि दोनों IC2 पर हैं)।

› अगर A, B के बराबर है और A, C के बराबर है, तो इसका मतलब हुआ कि B और C भी आपस में बराबर संतुष्टि देंगे।

› लेकिन अगर आप B और C बिंदुओं को ध्यान से देखेंगे, तो हो सकता है कि C में वस्तु X की ज़्यादा मात्रा हो जबकि वस्तु Y की मात्रा B जितनी ही हो। ऐसी स्थिति में C को B से ज़्यादा संतुष्टि देनी चाहिए।

› तो, यह एक विरोधाभास हो गया! इससे साबित होता है कि दो अनधिमान वक्र कभी एक-दूसरे को काट नहीं सकते, क्योंकि यह तर्क के खिलाफ है।

उत्तर – दो अनधिमान वक्र एक-दूसरे को नहीं काट सकते क्योंकि यदि वे काटते हैं, तो एक ही बिंदु पर दो अलग-अलग संतुष्टि स्तरों का विरोधाभास उत्पन्न होगा, जो उपभोक्ता व्यवहार के सिद्धांत के विपरीत है।

उदाहरण 9. एक उपभोक्ता के पास 60 रुपये हैं। वस्तु X की कीमत 10 रुपये प्रति इकाई और वस्तु Y की कीमत 5 रुपये प्रति इकाई है। उपभोक्ता का बजट सेट और बजट रेखा निर्धारित करें।

› पहले हम वस्तु X की अधिकतम मात्रा ज्ञात करेंगे जो वह खरीद सकता है: $60 \text{ रुपये} / 10 \text{ रुपये प्रति इकाई} = 6$ इकाइयाँ X (0 Y के साथ)।

› फिर हम वस्तु Y की अधिकतम मात्रा ज्ञात करेंगे जो वह खरीद सकता है: $60 \text{ रुपये} / 5 \text{ रुपये प्रति इकाई} = 12$ इकाइयाँ Y (0 X के साथ)।

› अब हम बजट रेखा का समीकरण बनाएंगे: $P_x \cdot X + P_y \cdot Y = M$ (आय)। यहाँ, $10X + 5Y = 60$ ।

› अब हम विभिन्न बंडल देखेंगे जो उपभोक्ता अपनी पूरी आय खर्च करके खरीद सकता है (बजट रेखा पर):

› 1. अगर $X = 0$, तो $5Y = 60 \Rightarrow Y = 12$ (बंडल: $0X, 12Y$)

› 2. अगर $X = 1$, तो $10 \cdot 1 + 5Y = 60 \Rightarrow 5Y = 50 \Rightarrow Y = 10$ (बंडल: $1X, 10Y$)

› 3. अगर $X = 2$, तो $10 \cdot 2 + 5Y = 60 \Rightarrow 5Y = 40 \Rightarrow Y = 8$ (बंडल: $2X, 8Y$)

› 4. अगर $X = 3$, तो $10 \cdot 3 + 5Y = 60 \Rightarrow 5Y = 30 \Rightarrow Y = 6$ (बंडल: $3X, 6Y$)

› 5. अगर $X = 4$, तो $10 \cdot 4 + 5Y = 60 \Rightarrow 5Y = 20 \Rightarrow Y = 4$ (बंडल: $4X, 4Y$)

› 6. अगर $X = 5$, तो $10 \cdot 5 + 5Y = 60 \Rightarrow 5Y = 10 \Rightarrow Y = 2$ (बंडल: $5X, 2Y$)

› 7. अगर $X = 6$, तो $10 \cdot 6 + 5Y = 60 \Rightarrow 5Y = 0 \Rightarrow Y = 0$ (बंडल: $6X, 0Y$)

› यह सभी बंडल बजट रेखा पर स्थित हैं।

› बजट सेट में ये सारे बंडल और कोई भी ऐसा बंडल आएगा जहाँ कुल खर्च 60 रुपये से कम हो, जैसे $(1X, 1Y)$ जहाँ सिर्फ 15 रुपये खर्च होते हैं।

› हमें यह भी समझना होगा कि बजट रेखा का ढाल (Slope) क्या होता है, जो P_x/P_y (वस्तु X की कीमत / वस्तु Y की कीमत) के बराबर होता है। यहाँ $10/5 = 2$ । इसका मतलब है कि Y की 2 इकाइयों को छोड़ने पर X की 1 इकाई खरीदी जा सकती है।

› बजट रेखा का मतलब है कि उपभोक्ता अपनी पूरी आय का उपयोग करके इन वस्तुओं के कितने बंडल खरीद सकता है। इससे यह पता चलता है कि उसे किस कीमत पर कितनी वस्तु मिल रही है, जो उसकी खरीदने की सीमा है।

उत्तर – बजट रेखा के बंडल: $(0X, 12Y)$, $(1X, 10Y)$, $(2X, 8Y)$, $(3X, 6Y)$, $(4X, 4Y)$, $(5X, 2Y)$, $(6X, 0Y)$ । बजट सेट में ये सारे बंडल और वो सभी बंडल शामिल हैं, जिनका मूल्य 60 रुपये से कम है।

उदाहरण 10. मान लीजिए एक उपभोक्ता के पास ₹100 हैं। वस्तु X की कीमत ₹10 प्रति इकाई और वस्तु Y की कीमत ₹20 प्रति इकाई है। बजट रेखा की प्रवणता ज्ञात कीजिए और बताइए कि अगर आय बढ़कर ₹120 हो जाए तो बजट रेखा पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

› पहले दी गई जानकारी लिखते हैं: आय (M) = ₹100, वस्तु X की कीमत (P) = ₹10, वस्तु Y की कीमत (P) = ₹20।

› बजट रेखा की प्रवणता का सूत्र है: $-P/P$ ।

› सूत्र में मान रखते हैं: प्रवणता = $-10/20 = -0.5$ ।

› अब आय में बदलाव देखते हैं। नई आय (M') = ₹120। कीमतें (P और P) वही रहती हैं।

› जब केवल आय बदलती है और कीमतें स्थिर रहती हैं, तो बजट रेखा समानांतर (parallel) खिसक जाती है। चूंकि आय बढ़ी है (₹100 से ₹120), बजट रेखा बाहर की ओर (दाहिनी ओर) खिसक जाएगी। इसकी प्रवणता वही रहेगी (-0.5)।

उत्तर – बजट रेखा की प्रवणता -0.5 है। आय बढ़कर ₹120 होने पर बजट रेखा समानांतर रूप से बाहर की ओर खिसक जाएगी, लेकिन उसकी प्रवणता में कोई बदलाव नहीं आएगा।

उदाहरण 11. मान लीजिए एक उपभोक्ता के पास ₹100 की आय है। वस्तु X की कीमत ₹10 और वस्तु Y की कीमत ₹20 है। नीचे दिए गए चित्र में, बजट रेखा और तीन अनधिमान वक्र (IC1, IC2, IC3) दिखाए गए हैं। बताइए, उपभोक्ता का इष्टतम चयन बिंदु कौन सा होगा और क्यों?

› पहला चरण: बजट रेखा को पहचानें। यह वह रेखा है जो उपभोक्ता की आय और वस्तुओं की कीमतों के आधार पर खरीद सकने वाले सभी बंडलों को दर्शाती है।

› दूसरा चरण: अनधिमान वक्रों (IC1, IC2, IC3) को देखें। ये वक्र विभिन्न बंडलों से मिलने वाली समान संतुष्टि के स्तर को दिखाते हैं। ऊपर वाला वक्र (जैसे IC3) नीचे वाले वक्र (जैसे IC1) से ज्यादा संतुष्टि देता है।

› तीसरा चरण: इष्टतम बिंदु वह होगा जहाँ बजट रेखा सबसे ऊँचे अनधिमान वक्र को सिर्फ 'स्पर्श' करती है, उसे काटती नहीं।

› चित्र में, मान लीजिए बजट रेखा IC2 को बिंदु 'E' पर स्पर्श करती है। IC1 बजट रेखा के नीचे है, यानी उससे कम संतुष्टि मिलती है, भले ही उसे खरीदना संभव हो। IC3 बजट रेखा के ऊपर है, यानी उसे खरीदना उपभोक्ता के बजट से बाहर है।

› इसलिए, बिंदु 'E' ही उपभोक्ता का इष्टतम चयन होगा।

उत्तर – उपभोक्ता का इष्टतम चयन बिंदु 'E' होगा, क्योंकि यह बिंदु बजट रेखा पर है और सबसे ऊँचे अनधिमान वक्र (IC2) को स्पर्श करता है, जो उपभोक्ता को अधिकतम संतुष्टि देता है और उसके बजट में भी है।

उदाहरण 12. यदि पेन की कीमत 10 रुपये से बढ़कर 15 रुपये हो जाती है, और उपभोक्ता की मांगी गई मात्रा 50 पेन से घटकर 30 पेन हो जाती है, तो इसे मांग वक्र पर कैसे दिखाओगे और मांग का नियम कैसे लागू होगा?

› सबसे पहले, एक ग्राफ बनाओ। Y-अक्ष पर कीमत (रुपये में) और X-अक्ष पर मांगी गई मात्रा (पेन में) दर्शाओ।

› पहला बिंदु प्लॉट करो: कीमत 10 रुपये पर मात्रा 50 पेन। इसे 'A' बिंदु नाम दो।

› दूसरा बिंदु प्लॉट करो: कीमत 15 रुपये पर मात्रा 30 पेन। इसे 'B' बिंदु नाम दो।

› अब बिंदु A और B को एक रेखा से मिलाओ। यह रेखा नीचे की ओर झुकी हुई होगी। यही आपका मांग वक्र है।

› मांग का नियम यहाँ स्पष्ट दिख रहा है: कीमत बढ़ने (10 से 15) पर मात्रा घट रही है (50 से 30)।

› मांग वक्र ऋणात्मक ढलान (Negative Slope) दर्शाता है।

उत्तर – ग्राफ पर, जैसे-जैसे कीमत Y-अक्ष पर ऊपर जाती है (बढ़ती है), वैसे-वैसे मांगी गई मात्रा X-अक्ष पर बाईं ओर जाती है (घटती है)। यह एक नीचे की ओर ढलान वाला मांग वक्र दिखाता है, जो 'मांग के नियम' की पुष्टि करता है।

उदाहरण 13. मान लीजिए एक उपभोक्ता के पास ₹1000 हैं और वह सेब (कीमत ₹100 प्रति किलो) और संतरे (कीमत ₹50 प्रति किलो) खरीदता है। अब सेब की कीमत घटकर ₹50 प्रति किलो हो जाती है। अनधिमान वक्र और बजट बाधा का उपयोग करके सेब के मांग वक्र के दो बिंदु ज्ञात करें।

› पहला चरण: प्रारंभिक संतुलन ज्ञात करें। जब सेब ₹100 और संतरे ₹50 हैं, तो बजट रेखा बनाएं। इस बजट रेखा पर सबसे ऊंचे अनधिमान वक्र के स्पर्श बिंदु (जो उपभोक्ता का इष्टतम चयन है) को ढूँढ़ें। मान लीजिए उपभोक्ता 5 किलो सेब और 10 किलो संतरे खरीदता है। तो मांग वक्र का पहला बिंदु है: कीमत ₹100 पर मांग 5 किलो।

› दूसरा चरण: कीमत में बदलाव के बाद नया संतुलन ज्ञात करें। अब सेब की कीमत ₹50 प्रति किलो हो जाती है, जबकि संतरे की कीमत और उपभोक्ता की आय वही रहती है। एक नई बजट रेखा बनाएं (जो अब सेब की तरफ ज़्यादा झुकी होगी)। इस नई बजट रेखा पर सबसे ऊंचे अनधिमान वक्र के नए स्पर्श बिंदु को ढूँढ़ें। मान लीजिए उपभोक्ता अब 12 किलो सेब और 8 किलो संतरे खरीदता है।

› तीसरा चरण: मांग वक्र के बिंदुओं को चिह्नित करें। हमारे पास दो बिंदु हैं: (₹100, 5 किलो) और (₹50, 12 किलो)। इन बिंदुओं को कीमत (Y-अक्ष) और मात्रा (X-अक्ष) वाले ग्राफ पर चिह्नित करें और उन्हें जोड़ दें। यही आपका सेब का मांग वक्र है।

उत्तर – सेब के मांग वक्र के दो बिंदु हैं: (₹100, 5 किलो) और (₹50, 12 किलो)। इन बिंदुओं को जोड़कर आप मांग वक्र बना सकते हैं।

उदाहरण 14. मान लीजिए एक उपभोक्ता की आय ₹10,000 प्रति माह है और वह हर महीने 5 किलो 'x' वस्तु खरीदता है। जब उसकी आय बढ़कर ₹15,000 प्रति माह हो जाती है, तो वह 'x' वस्तु की 8 किलो मात्रा खरीदता है। तो बताइए, 'x' वस्तु सामान्य है या निम्नस्तरीय?

› पहला कदम: देखो, जब उपभोक्ता की आय ₹10,000 से बढ़कर ₹15,000 हुई, इसका मतलब आय बढ़ी।

› दूसरा कदम: अब देखो, 'x' वस्तु की मांग 5 किलो से बढ़कर 8 किलो हो गई, मतलब मांग भी बढ़ गई।

› तीसरा कदम: क्योंकि आय बढ़ने पर वस्तु की मांग भी बढ़ी है, तो 'x' वस्तु एक सामान्य वस्तु है।

उत्तर – 'x' वस्तु एक सामान्य वस्तु है।

उदाहरण 15. मान लीजिए बाजार में कॉफी की कीमत 10% बढ़ जाती है। यदि चाय और कॉफी स्थानापन्न वस्तुएँ हैं, तो चाय की मांग पर क्या असर पड़ेगा?

› पहला, हमें यह पहचानना है कि चाय और कॉफी 'स्थानापन्न' वस्तुएँ हैं, यानी हम एक के बदले दूसरी इस्तेमाल कर सकते हैं।

› दूसरा, स्थानापन्न वस्तुओं के नियम के अनुसार, यदि एक वस्तु (कॉफी) की कीमत बढ़ती है, तो उपभोक्ता उस महंगी वस्तु को छोड़कर सस्ती विकल्प (चाय) की तरफ जाते हैं।

› तीसरा, इसका मतलब है कि लोग अब ज़्यादा कॉफी की बजाय चाय खरीदेंगे, जिससे चाय की मांग बढ़ जाएगी।

उत्तर – चाय की मांग 'बढ़ जाएगी'।

उदाहरण 16. एक उपभोक्ता पहले 50 रुपये में 2 किलो चीनी खरीदता था। अब अगर चीनी की कीमत 40 रुपये हो जाए, तो वह 3 किलो चीनी खरीदता है। वहीं, अगर उसकी आय बढ़ जाए और चीनी की कीमत 50 रुपये ही रहे, तब भी वह 3 किलो चीनी खरीदता है। दोनों स्थितियों को 'मांग वक्र पर संचलन' और 'मांग वक्र में शिफ्ट' के संदर्भ में समझाओ।

› पहली स्थिति में: उपभोक्ता 50 रुपये में 2 किलो चीनी खरीदता था, अब कीमत 40 रुपये हुई तो 3 किलो चीनी खरीदता है।

› यहाँ केवल चीनी की कीमत बदली है (50 से 40 रुपये) और उसी से मांग (2 से 3 किलो) प्रभावित हुई है।

› इसका मतलब है कि हम उसी मांग वक्र पर एक बिंदु से दूसरे बिंदु पर जा रहे हैं। इसे 'मांग वक्र पर संचलन' कहते हैं, विशेष रूप से 'मांग का विस्तार' (extension of demand)।

› दूसरी स्थिति में: उपभोक्ता की आय बढ़ गई, लेकिन चीनी की कीमत 50 रुपये ही है, फिर भी वह 3 किलो चीनी खरीदता है।

› यहाँ चीनी की कीमत में कोई बदलाव नहीं हुआ है, बल्कि उपभोक्ता की 'आय' (कीमत के अलावा एक अन्य कारक) बदल गई है।

› आय बढ़ने से (कीमत वही रहने पर) उपभोक्ता ज़्यादा खरीद रहा है, इसका मतलब है कि पूरा मांग वक्र ही दाईं ओर

खिसक गया है। इसे 'मांग वक्र में शिफ्ट' कहते हैं, विशेष रूप से 'मांग में वृद्धि' (increase in demand)।

उत्तर – पहली स्थिति 'मांग वक्र पर संचलन' है क्योंकि केवल कीमत बदली। दूसरी स्थिति 'मांग वक्र में शिफ्ट' है क्योंकि कीमत स्थिर रहते हुए आय में बदलाव आया।

उदाहरण 17. मान लीजिए एक बाज़ार में दो उपभोक्ता हैं। उपभोक्ता 1 की मांग (Q_1) = $10 - P$ और उपभोक्ता 2 की मांग (Q_2) = $15 - P$ है। यद्वस्तु की कीमत (P) = 5 रुपये हो, तो बाज़ार मांग ज्ञात करें।

- › सबसे पहले, उपभोक्ता 1 की मांग निकालेंगे जब $P = 5$ रुपये हो: $Q_1 = 10 - 5 = 5$ इकाई।
- › अब, उपभोक्ता 2 की मांग निकालेंगे जब $P = 5$ रुपये हो: $Q_2 = 15 - 5 = 10$ इकाई।
- › अंत में, बाज़ार मांग (Q_m) निकालने के लिए दोनों उपभोक्ताओं की मांग को जोड़ देंगे: $Q_m = Q_1 + Q_2 = 5 + 10 = 15$ इकाई।

उत्तर – बाज़ार मांग 15 इकाई है।

उदाहरण 18. मान लीजिए एक दुकान में पेन की कीमत 10 रुपये से बढ़कर 12 रुपये हो गई, और इसकी मांग 100 पेन से घटकर 80 पेन हो गई। मांग की कीमत लोच की गणना करें।

- › पहला कदम, कीमत में प्रतिशत परिवर्तन निकालो: $(\text{नई कीमत} - \text{पुरानी कीमत}) / \text{पुरानी कीमत} * 100 = (12 - 10) / 10 * 100 = 2 / 10 * 100 = 20\%$.
- › दूसरा कदम, मांगी गई मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन निकालो: $(\text{नई मात्रा} - \text{पुरानी मात्रा}) / \text{पुरानी मात्रा} * 100 = (80 - 100) / 100 * 100 = -20 / 100 * 100 = -20\%$.
- › अब आखिर में, मांग की लोच का सूत्र लगाओ: $\text{मांगी गई मात्रा में } \% \text{ परिवर्तन} / \text{कीमत में } \% \text{ परिवर्तन} = -20\% / 20\% = -1$. यहाँ माइनस का निशान सिर्फ यह बताता है कि कीमत और मांग उल्टी दिशा में चलते हैं, हम सिर्फ संख्या '1' देखते हैं।

उत्तर – मांग की कीमत लोच = -1 (या सिर्फ 1, क्योंकि हम सिर्फ परिमाण देखते हैं)।

उदाहरण 19. एक रेखिक मांग वक्र AB है। मान लीजिए बिंदु A पर कीमत अक्ष पर है और बिंदु B मात्रा अक्ष पर है। मांग वक्र AB के मध्य बिंदु M पर लोच ज्ञात कीजिए।

- › पहला कदम: मांग वक्र AB का एक चित्र बनाएं, जिसमें A सबसे ऊपर (कीमत अक्ष पर) और B सबसे नीचे (मात्रा अक्ष पर) हो।
- › दूसरा कदम: मांग वक्र AB के ठीक बीच में एक बिंदु M अंकित करें।
- › तीसरा कदम: ज्यामितीय सूत्र का प्रयोग करें: $\text{लोच} = (\text{बिंदु के नीचे का खंड}) / (\text{बिंदु के ऊपर का खंड})$ ।
- › चौथा कदम: बिंदु M, क्योंकि यह मांग वक्र का मध्य बिंदु है, इसलिए इसके नीचे का खंड (MB) और इसके ऊपर का खंड (AM) बराबर होंगे (यानी $AM = MB$)।
- › पांचवां कदम: सूत्र में मान रखने पर, $\text{लोच} = MB / AM = MB / MB = 1$ ।
- › छठा कदम: इसलिए, मध्य बिंदु पर मांग की लोच 1 होगी।

उत्तर – मांग वक्र AB के मध्य बिंदु M पर लोच 1 (इकाई लोचदार) होगी।

उदाहरण 20. मान लीजिए एक वस्तु की कीमत 10 रुपये से बढ़कर 12 रुपये हो जाती है, और उसकी मांग पहले भी 100 इकाइयाँ थी और बाद में भी 100 इकाइयाँ ही रहती है। यह किस प्रकार का स्थिर लोच मांग वक्र होगा?

- › यहाँ कीमत में बदलाव (10 से 12 रुपये) हुआ है।
- › लेकिन मांग की मात्रा (100 इकाइयाँ) में कोई बदलाव नहीं हुआ है।
- › मांग की लोच का सूत्र है: $(\text{मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन}) / (\text{कीमत में प्रतिशत परिवर्तन})$ ।
- › मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन = 0% है।
- › तो, मांग की लोच = $0 / (\text{कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}) = 0$ ।

उत्तर – यह पूर्णतया लोचहीन मांग वक्र (Perfectly Inelastic Demand Curve) होगा, जहाँ $e_D = 0$ ।

उदाहरण 21. सोनम एक स्कूल टीचर है। अगर दाल की कीमत 20% बढ़ जाती है और वह अपनी दाल की खरीद 5% कम करती है, तो दाल की मांग की लोच क्या है और इसकी लोच का स्वभाव क्या है? अगर वह आईफोन की कीमत 20% बढ़ने पर उसकी खरीद 50% कम कर दे तो आईफोन की लोच क्या होगी?

- › पहले दाल के लिए गणना करते हैं: मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन = -5%, कीमत में प्रतिशत परिवर्तन = 20%
- › मांग की लोच (दाल) = $|\text{मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन} / \text{कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}| = |-5\% / 20\%| = 0.25$
- › क्योंकि लोच 1 से कम है ($0.25 < 1$), तो दाल की मांग 'बेलोचदार' है। यह एक आवश्यक वस्तु है।
- › अब आईफोन के लिए गणना करते हैं: मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन = -50%, कीमत में प्रतिशत परिवर्तन = 20%
- › मांग की लोच (आईफोन) = $|\text{मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन} / \text{कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}| = |-50\% / 20\%| = 2.5$
- › क्योंकि लोच 1 से ज्यादा है ($2.5 > 1$), तो आईफोन की मांग 'लोचदार' है। यह एक विलासिता की वस्तु है।

उत्तर – दाल की मांग की लोच 0.25 है और यह बेलोचदार है। आईफोन की मांग की लोच 2.5 है और यह लोचदार है।

उदाहरण 22. मान लीजिए एक दुकान पर आलू की कीमत 20 रुपये प्रति किलो से बढ़कर 25 रुपये प्रति किलो हो जाती है, और पहले 100 किलो आलू बिकते थे, लेकिन अब 80 किलो ही बिकते हैं। तो कुल व्यय पर क्या प्रभाव पड़ा और मांग की लोच का स्वभाव क्या है?

- › सबसे पहले, कीमत बढ़ने से पहले का कुल व्यय निकालते हैं: 20 रुपये/किलो × 100 किलो = 2000 रुपये।
- › अब, कीमत बढ़ने के बाद का कुल व्यय निकालते हैं: 25 रुपये/किलो × 80 किलो = 2000 रुपये।
- › यहाँ हम देखते हैं कि कीमत बदलने पर भी कुल व्यय (2000 रुपये) अपरिवर्तित रहा।
- › क्योंकि कुल व्यय अपरिवर्तित रहा, इसका मतलब है कि मांग इकाई लोचदार (Elasticity = 1) है।

उत्तर – कीमत बढ़ने पर भी कुल व्यय अपरिवर्तित रहा (2000 रुपये), अतः मांग इकाई लोचदार है।

बोर्ड परीक्षा के लिए खास

- यह अवधारणा अर्थशास्त्र में उपभोक्ता के व्यवहार को समझने की नींव है। इसके मूल अभिग्रहों को समझना आगे के सिद्धांतों को समझने में मदद करेगा।
- यह नियम बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है। इसकी परिभाषा, तालिका और आरेख के साथ स्पष्टीकरण तैयार करें। याद रखें, कुल उपयोगिता और सीमांत उपयोगिता का संबंध बहुत महत्वपूर्ण है।
- यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मांग वक्र के ढलान का कारण और हासमान सीमांत उपयोगिता नियम से उसका संबंध, अक्सर 3 या 4 अंकों में पूछा जाता है। इसे ग्राफ (चित्र) के साथ अच्छे से तैयार करें।
- अनधिमान वक्र के गुणों को अच्छे से समझना और उन्हें ग्राफ पर बनाना बहुत ज़रूरी है, ये अक्सर बोर्ड परीक्षाओं में सीधे प्रश्न के रूप में आते हैं।
- यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर MRS की परिभाषा, हासमान MRS का नियम और इसका अनधिमान वक्र की आकृति से संबंध पूछा जाता है। तालिका के उदाहरण देकर व्याख्या करने पर अच्छे अंक मिलते हैं।
- यह भाग बोर्ड परीक्षाओं में अक्सर पूछा जाता है। 'दो अनधिमान वक्र एक-दूसरे को क्यों नहीं काटते?' – इस पर सीधा प्रश्न आता है, इसे आरेख बनाकर समझाना सीख लें।
- यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। बजट रेखा के समीकरण और उसके ढाल (Slope) को अच्छे से समझना और ग्राफ पर इसे बनाना सीख लेना, क्योंकि इससे संबंधित प्रश्न अक्सर पूछे जाते हैं।
- यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर चित्र बनाकर इष्टतम बिंदु को दर्शाने और उसकी व्याख्या करने के लिए प्रश्न आते हैं। यह ज़रूर अभ्यास करना कि बजट रेखा और अनधिमान वक्र के स्पर्श बिंदु पर $MRS = P_x/P_y$ कैसे होता है।
- मांग वक्र का चित्र बनाते समय अक्षों (axes) पर सही लेबल लगाना और ढलान (slope) को ठीक से दिखाना बहुत ज़रूरी है। इसके लिए अक्सर पूरे नंबर मिलते हैं, तो प्रैक्टिस ज़रूर करना।

- यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर, अनधिमान वक्रों और बजट बाधा का उपयोग करके मांग वक्र की व्युत्पत्ति का सचित्र वर्णन करने के लिए लंबा प्रश्न (5-6 अंक) पूछा जाता है। प्रतिस्थापन और आय प्रभावों को समझाना न भूलें।
- बोर्ड परीक्षा में सामान्य और निम्नस्तरीय वस्तुओं के बीच अंतर स्पष्ट करने के लिए अक्सर सवाल पूछे जाते हैं, साथ ही उनके उदाहरण भी पूछे जाते हैं।
- यह अवधारणा बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! अक्सर 'स्थानापन्न' और 'पूरक' वस्तुओं को परिभाषित करने और उदाहरणों के साथ इनके मांग पर पड़ने वाले प्रभावों को समझाने वाले प्रश्न आते हैं।
- यह कॉन्सेप्ट बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! 'मांग वक्र में शिफ्ट' और 'मांग वक्र पर संचलन' के बीच का अंतर उदाहरणों के साथ समझाना अक्सर पूछा जाता है। इसे ग्राफ के साथ भी प्रैक्टिस करें।
- यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं में अक्सर छोटे प्रश्नों के रूप में या बड़े प्रश्नों के भाग के रूप में आती है। इसके ग्राफिकल निरूपण पर भी ध्यान देना।
- यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! मांग की लोच की गणना और उसके प्रकारों को उदाहरणों के साथ अच्छी तरह समझ लें।
- यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! 'लोच और व्यय के बीच संबंध' को हमेशा उदाहरण के साथ स्पष्ट करने के लिए कहा जाता है, इसलिए तीनों स्थितियों (लोचदार, बेलोचदार, इकाई लोचदार) को अच्छी तरह समझें।

एक नज़र में रिवीज़न

- › उपभोक्ता आय से अधिकतम संतुष्टि हेतु वस्तु बंडल का चुनाव।
- › उपभोग बढ़ने पर, प्रत्येक अतिरिक्त इकाई की सीमांत उपयोगिता घटती है।
- › मांग वक्र = कीमत-मात्रा संबंध; हासमान सीमांत उपयोगिता नियम पर आधारित; नीचे की ओर ढलान।
- › उपयोगिता: क्रमवाचक (क्रम देना), अनधिमान वक्र (समान संतुष्टि बंडल)।
- › MRS: एक वस्तु छोड़ दूसरी लेने की दर, संतुष्टि समान, घटता है (हरासमान MRS)।
- › अनधिमान वक्र: नीचे ढलवा, उच्च वक्र = उच्च संतुष्टि, कभी नहीं काटते, अक्षों को नहीं छूते।
- › बजट सेट: खरीदने योग्य सभी बंडल। बजट रेखा: पूरी आय खर्च करने वाले बंडल।
- › उपभोक्ता का इष्टतम चयन: बजट रेखा, सबसे ऊँचे अनधिमान वक्र को स्पर्श करती है।
- › मांग वक्र: कीमत-मात्रा का ग्राफिक संबंध। मांग का नियम: कीमत तो मांग ।
- › अनधिमान वक्र + बजट बाधा से इष्टतम चयन; कीमत बदलने पर मांग वक्र बनता है।
- › आय बढ़ने पर मांग बढ़े = सामान्य वस्तु; आय बढ़ने पर मांग घटे = निम्नस्तरीय वस्तु
- › स्थानापन्न: एक का स्थान लेते, एक की कीमत बढ़े तो दूसरे की मांग बढ़े। पूरक: साथ उपयोग, एक की कीमत बढ़े तो दूसरे की मांग घटे।
- › कीमत बदलने पर 'संचलन'; अन्य कारक बदलने पर 'शिफ्ट' (दाएं/बाएं)।
- › बाजार मांग = सभी व्यक्तिगत मांगों का योग।
- › मांग की लोच = मांगी गई मात्रा में % परिवर्तन / कीमत में % परिवर्तन
- › लोचदार: कीमत व व्यय विपरीत; बेलोचदार: कीमत व व्यय समान; इकाई लोचदार: व्यय स्थिर।